"विशेष सावधानी"

लंगर तथा खाने-भोजन इत्यादि का प्रोग्राम कथा-कीर्तन अथवा सत्संग इत्यादि से दो-तीन घंटे पहले ही पूर्ण तौर पर समाप्त करना ही वांच्छनीय हितकारी साबित होगा। (गरीबों के लिये लंगर तथा मित्र-सम्बन्धियों सहित सभी को यथा शक्ति उपलब्ध पदार्थों से संतुष्ट करने का हर सम्भव प्रयास करें। कारण सभी की अनुकूलता का संकल्प ही आप के लिये उत्तम फलदायक "प्रभू" की (दया के) स्त्रोत का आधार है)। कथा-कीर्तन, सत्संग

इत्यादि में केवल "शुद्ध रूहानी ज्ञान" को ही "प्रभू प्रसाद" के रूप में ग्रहण करना ही "आत्मिक कल्याण" का साधन है शेष केवल संसारिकता मात्र है और उसमें केवल बन्धन ही है मुक्ति की तो कहीं कल्पना भी नहीं की जा सकती । विशेष परिस्थिति श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के प्रकाश की अवस्था में (कड़ाह-प्रसाद) "केवल" की देग का उपस्थित होना आवश्यक वांच्छनीय है । (शेष केवल सादा पानी ही सभी में जरूरतमंदो को प्राप्त हो ।) अखण्ड पाठ की अवस्था में भोग 3-4 बजे शाम को पड़ना ही अति उत्तम फलदायक है । शेष लंगर इत्यादि द्वारा सुबह से एक-दो बजे तक सभी को संतुष्ट करते रहें । इस मर्यादा से बहुत सी कुरीतियों (फंदे मास्टर जी के) से छुटकारा मिल सकने की उत्तम संकल्पिक अवस्था है।

श्री गुरू गोबिंद सिंह जी ने अपनी मुबारक जुबान से भी गुरू ग्रन्थ साहिब जी की पूरी बाणी को अर्थ सहित लगातार दो महीने से अधिक समय में दर्ज करवाया था । विचार करना चाहिये कि क्या उन्हें गुरू महिमा का ज्ञान नहीं था ? वे स्वंय उसी पदवी पर आसीन थे । पर निर्देश क्या दिया "जो हम को परमेश्वर उचरै है - ते सभ नरक कुंड में परिअ है ।" कारण आने वाले समय की भयानक करूपता को ध्यान में रख कर के ही "अकाल पुरख परमात्मा की आत्मिक प्रेरणा" को प्रकट किया तलवार के

बल से । इस "महंती" नाम के गलित कुष्ठ रोग को जो इंसानी जीवन को एक दीमक की तरह चाटे जा रही थी तलवार से काट कर सदा के लिये "दफन" कर दिया । फिर भी कुछ सड़ा अंग बाकी रह ही गया था शायद, जो अब इस समय फिर दृष्टिगोचर हो रहा है (कुछ विशेष मत-धर्म) जो अपनी भेंट-पूजा, ध्यान इत्यादि करवा कर खुद "परमेश्वर" बन बैठे हैं और दुनिया को गुमराह करने में लगे हुऐ हैं । इन से केवल एक ही सवाल जानिये । क्या ये जून से रहित-स्वंय भू (अर्थात अपने आप से) हैं ? अथवा मनुष्य भी एक जून हैं तथा आप की पूर्ण हस्ती (शुरू से आखिर) तक किसी और से रोशन है ? गुरू नानक जी अपने मूल मन्त्र में उस एक के भेद को प्रकट करते हैं। "अजूंनी सैभ" केवल वही खुद "समर्थ" है शेष सभी उसी से "रोशन" हैं। "सगलिआ भउ लिखिआ सिर लेख । नानक निरभउ निरंकार सच एक"। (1-464) वह कभी जून में नहीं आता पर कोई जड़-चेतन उस से (कल्पना में भी) रहित नहीं है ! फिर ये खरपतवार कैसे चल रही है ? तप का प्रभाव है नाम कमाया है । उसका दुरूपयोग हो रहा है । तप घटता जायेगा । यही विधान है । शीघ्र ही तलवार रूपी झाड़ू फिरेगा । स्वंय "अकाल पुरख परमात्मा" ही इस कार्य को सम्पन्न करेंगे । ये कोई पहली बार दुरुपयोग नहीं हो रहा । गोबिंद सिंह जी ने अपनी कथा में सब भेद स्पष्ट किये हैं कि कैसे-कैसे किन-

किन को ताकत दे करके प्रभू ने इस संसार में भेजा था और फिर किस तरह से उन्होंने अपने-2 पंथ मत-धर्म इत्यादि चलवा कर के दुनिया को गुमराह किया और स्वंय ईश्वर बन बैठे ! अपनी भेंट-पूजा, ध्यान करवा वरदान देने लेगे । आखिर कमाई खत्म हुई और सभी खाक में मिल गये । केवल इतिहास ही अपने को दोहरा रहा है । अतः इस "महंती प्रथा" से अपने को बचा कर के "श्री दशमेश जी" द्वारा बक्शी मर्यादा (रहतनामें) को धारण कर केवल उस "एक" सभी गुरूओं के गुरू (शब्द) को ही दीन हीन हो ध्यान तथा सिमरण करने में ही इस दुर्बल हुई आत्मा का केवल कल्याण है । संसार में जो भी पथ चलेगा इस "एक" के अधीन इसी रहतनामें (मर्यादा) में से हो कर के ही प्रकट होने की कल्पना को साकार कर पायेगा । शेष सभी संसार के रो (बहाव) में अवश्य ही बहेंगे, कोई भी उन्हें रोक सकने की कल्पना भी नहीं कर सकता कारण यह आँधी उस "एक" पर ही केवल आधारित है । अतः उसी का केवल ध्यान-सिमरण पूर्ण उत्तम फलदायक है। "जल थल महिअल पूर्या सुआमी सिरजनहार; अनेक भाति होई पसरिआ नानक "एक ओंकार"। "हरि सिमर एक ओंकार साचा-सभ जगत जिन उपाइआ ।"